जीवन पलो में तलाशता

कविता कोश

*** अध्यात्म * हास्य व्यंग्य * विसंगतियाँ**

सुरेश कुमार गुप्ता (8097893453)

ईमेल : skgakoli@gmail.com

जीवन पलो में तलाशता

काव्य

अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,

उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य

****

सुरेश कुमार गुप्ता

362, डीएसआर सनराइज टावर्स,

चन्नासंद्रा मेन रोड, ए के गोपालन कॉलोनी,

व्हाइटफ़ील्ड, बेंगलुरु, कर्नाटक 560066

मोबाइल नंबर : 8097893453

ईमेल : skgakoli@gmail.com

भूमिका

प्रस्तुत संकलन काव्य रूप में
अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,
उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य
की प्रस्तुति है।

मन भटकता है ।
मन विषाद ग्रस्त हो जाता है,
जब जब मन समाज की
विसंगतियों से दो चार होता है।

जरूरी तो नही कोई क्या नाम दे
इस तुक बंदी को,
भावनाओ में वर्षो का सार
संकलित होता है।

मन कभी आध्यात्म में झुके
कभी इतिहास में झांक आये।
दूर दूर विसंगतियों में जाए।
व्यंग्य उजागर कर जाए।

कभी मन हास्य से खिलखिलाए।
बेबस है इंसान कुछ कर तो न पाए,
पर बोलने से मगर
कहां चुप रह पाए।

अनुक्रमणिका

19	विसंगति	शहीद बाहर से मिल जाए
20	विसंगति	जनता आई आपके द्वार
21	व्यंग	हिंदे आज़म
22	व्यंग	गुलाम आज़ाद हो गए
23	व्यंग	रवीशजी कैसे बचोगे
24	व्यंग	पवित्र खड़ाऊ शीशधर
25	व्यंग	पहले न्यूज़ क्लोन
26	व्यंग	मैं तो साला साहब हुआ
27	व्यंग	आपकी आत्मकथा
28	व्यंग	हू एम आई
29	व्यंग	अब सत्ता भगवान है
30	व्यंग	हल्की सी स्मृति
31	व्यथा	फ़ोन से डरने लगे है
32	व्यथा	कोर्ट को सुप्रीम बनाने का
33	व्यथा	मि लार्ड रहनुमा बनिये
34	व्यथा	समाज और दरिंदे
35	व्यथा	कहते है महंगाई किधर है
36	व्यथा	आग को ईंधन बनाए
37	व्यथा	जलभुन गयी वो शेरनी

38	व्यथा	नूपुर जब खनखनाए
39	हास्य	पेगासस मिल जाए-
40	हास्य	हमे चाचा दिला दो
41	हास्य	रुपया फिसल जाए
42	हास्य	वो उधर पूंछ हिलाए
43	हास्य	यात्रा के खास पल
44	हास्य	दुबई भाग निकले
45	हास्य	सपना धराशायी हो गया
46	हास्य	जिसने इतिहास को मिस किया
47	हास्य	घुंघुरू बज उठे
48	हास्य	आखिर ध्यान किधर था

1. जीवन पलो में तलाशता

दालान में खांसता हांफता अब सुस्ताने लगा
मुड़कर जो देखूं मिलों सफर तय कर आया

जमाना जिसे अनुभव कहे पाने में वर्षो लगे
किसे जरूरत यहां जीवन पलो में तलाशता

जीवन के अंतिम पड़ाव में राहे धुंधली पड़ती
ढलते सूरज की रोशनी में अंधकार उत्तर रहा

कुर्सी की पेटी बांध जटिल राहो पर बढ़ रहा
लौटना तो संभव नही अकेला आगे बढ़ चला

संगी साथी लौटे सारे आगे राह कठिन होगा
अगोचर के डर में वक्त संजोता आनंद लेता

प्रकाशपुंज न रहा कभी समाज में चमकता
अनुभव क्या साझा करुं बचपन सा भटकता

एकांत गले लगा एकांत से संघर्ष सीखता रहा
बीमारी मेहमान बने मित्रवत साथ जीने लगा

सकारात्मक मन से ईर्ष्या बड़बड़ से दूर हुआ
व्यायाम को दिनचर्या बना उत्साहित हो रहा

बिस्तर बंधा जीवन हो मां न देखभाल के लिए
देखभाल में न परिजन जाने की तैयारी करता

अनजाने नौकर सेवा में रहत थकान ऊब लिए
संभाल चेहरे पर मुस्कान उनका आभारी रहा

जैसे-जैसे बड़ा होता समझने में सक्षम हो रहा
आसक्तियां छोड़ मानसिक रूप से तैयार रहा

समस्या से दूर बच्चों के मामलों में न पड़ता
ड्राइविंग वे करे दखलंदाजी से दूर खड़ा रहा

प्रकृति जीवन मार्ग है प्रवाह में समभाव बहना
जीवन को सम्बल देती उसमें जीवन तलाशता

धुंधले चित्र पर रंग डाल छोटी यादो पे मुस्काता
दिलों में मरहम लगाए वे तस्वीरे सजा संवारता

****

2. बहुत समय हो गया

सही है मगर न्याय क्या न्याय रहा नही
सही कहा आपने बहुत समय हो गया
गुनहगार को समय पर दंड दे न पाए
गुनाह आपका नही वक्त गुजरता गया

काश आप इसी तर्ज पर न्याय कर दे
कहीं कैदी बंद है उन पर भी रहम करे
अगर वक्त पर देश मे न्याय हो न सके
अदालत के नाम पैसा बहाना बंद करे

सीबीआई ईडी सालों केस खोल रखे
सालों बाद तफसीस पूरी नही हो सके
कहीं जमानत कहीं चार्जशीट नही हो
क्योकि न्याय के लिए अब वक्त नही

देख लेते अम्बार अदालत में केसो का
न्याय के इंतज़ार में समय बीतता गया
सालों आप गुनाह तक पहुंच नही पाते
नाकामी समय के साथ दफन कर चले

कितना पैसा न्याय करने में बहाते हो
कितना जनता न्याय पाने में बहाती है
अगर समय पर न्याय दे नही पाते हो
सही है आप न्याय बंद कर सकते हो

सही कहा आपने बहुत समय हो गया
सालों गुजर गए अब तो बंद कर ही दो
न्याय देना अब आपके बस का न रहा
तो किसी योग्य को आने की जगह दो

जो न्याय पर टूटते भरोसे को थाम सके
हर बेगुनाह को नजरअंदाज न कर सके
हर गुनहगार इंसाफ की तराजू में तूले
न्याय हर हाल बिना कीमत मिल सके

समय पर न्याय दे अन्याय नही करेगा
बेवजह बेगुनाह को जेल में नही रहैगा
मेरा देश धरती पर अनोखा स्वर्ग होगा
जहां न्याय न बिकेगा न खरीदना होगा

कोई नही कहेगा समय बहुत होता गया
हम नाकाम रहे अब न्याय भूलना होगा
गिरेबान में झांको कहीं आपका फैसला
इतिहास के काले पन्नो में दर्ज न रहेगा
****

3. हाँ मैं सदियां जी आया

सही कहते है हाँ मैं सदियां जी आया
इसी पीढ़ी ने जो देखा कौन देख पाया

क्यों न विरासत से यह पीढ़ी गर्व करे
दो सदियां दो सहस्त्राब्दियां जी आया

भरापूरा परिवार रोज शादी सा माहौल
गांव के संयुक्त परिवार संयुक्त त्यौहार

गांव के कच्चे मकान महलनुमा घरबार
नदीनाले खेतखलिहान भौर की बयार

बचपन बीता शहरों के भीड़ में खो गए
शहरों के छोटे घर भीड़भाड़ में घबराए

काला फ़ोन से फोनबूथ पेजर का प्यार
मोबाइल इंटरनेट स्मार्ट फोन का सफर

ग्रामोफोन रिकॉर्डर वॉकमेन पे संगीत
रेडियो फ्लैटस्क्रीन स्मार्ट टीवी है मीत

हाथों लिखे पत्र टाइपराइटर टेलीग्राम
टेलेक्स फैक्स बन गए अब इतिहास

कंप्यूटर लैपटॉप सीडी का था इनाम

ईमेल व्हाट्सएप ट्विटर एवं इंस्टाग्राम

मनीऑर्डर पोस्टलऑर्डर देखा चलन
ऑनलाइन गूगलपे पेटीएम का मिलन

अंतहीन वॉक चले साइकिल पे सवार
गलियों की धूल मिट्टी में सने रहे खेल

रेलगाड़ी समुद्र से हवाई तक का सफर
एड्स केंसर और रहा कोरोना का वॉर

****

4. इस प्रेम गली में

इच्छा जाहिर की तो इच्छा मृत्यु का वरदान मिला
आपका राजनीतिक सन्यास इच्छा अनुरूप हुआ

गडकरीजी आप खड़े थे जहां अंपायर आउट हुए
मेहनत रंग लाती कद से विकेट खतरे में पड़ गया

वे पचहतर में राज करेंगे आप बेवक्त मंडल मे गए
कद बड़ा करने की लालसा में उन्हें छोटा बता गए

जंगल मे दो शेर नही म्यान में दो तलवार कैसे रहे
क्या इस मनोदशा में राजनीति से सन्यास ले गए

विश्व की सबसे बड़ी पार्टी क्या इतनी संकड़ी थी
इस प्रेम गली में अढ़ाई से ज़्यादा की जगह न थी

****

15. जब तू गुनाह का हिसाब देगा

काज़ी तेरा केस खुदा की अदालत में होगा
कटघरे में तुझे गुनाहों का हिसाब देना होगा
सफाई में वहां कोई तेरा जबाब नही सुनेगा
गुनाह की गवाही तू देगा जब हिसाब होगा

गुनाह छोटा या किसी दंगे का सूत्रापात था
कैसे तेरे फैसले पर बेगुनाह का लहु बहा था
दिल ने समझाया जमीर ने भी धिक्कारा था
डर लालच स्वार्थ में सता के नशे में अंधा था

तू फैसला लिखने बैठा खुदा तेरे करीब था
कलम कांपी दिल कांपा आंखे न देख सकी
आंख पे जो मोह लालच स्वार्थ का पर्दा था
सही गवाह नकारे वे गुनाहो की गवाही देंगे

उनके सपने टूटे जिन निगाहो में आस थी
बेबसी ने तुझे रोका था कलम फिसल गई
खुदा तुझे हर गुनाह में मुजरिम करार देगा
दिन दूर नही जब तू गुनाह का हिसाब देगा

****

6. अभावों से निकल कर

यादे धुंधली पडने लगी याददाश्त साथ छोड़ रही
थे वे कितने हसीन पल जीवंत थी बरसती चांदनी
खिलखिलाने गमगीन मन आ जाती पूनम की रात
बरसा अमृत बड़ के पत्तो से चांदनी छन्न कर आई

अमावस की हसीन रात सजा लाए तारो की बारात
मनोदशा भुलकर दिल हुआ बेताब दिल छू कर गईं
तारो भरी भोर क्षितिज में लालिमा लिए आकाश
धीरे धीरे खो जाते तारे हल्के हल्के बढ़ता प्रकाश

दिमाग बहकाती हौले हौले चलती सुबह की पवन
बारिश की भीगी सुबह जमीन की सौंधी सी महक
दिल बेकाबू कर जाते वे दिन दिल उठता था मचल
हौले हौले बढ़ रहा स्वर्ग जैसे रहता धरती पर उत्तर

क्या खोया इस विकासवाद के ,कांक्रीट के जंगल मे
खोए खुशनुमा पेड़ पौधे चहचहाते पक्षियों के झुंड
बेखौफ आते थे करीब चुराते खुली हथेली से बीज
उड़ती डोलती चिड़ियाऐं आंगन में ले भागती अन्न

बार बार सवाल उठता कुछ तो पाया विज्ञानवाद में
पर क्या थी कीमत जहां खोया प्रकृति का सानिध्य
सोचता हूं क्या था सफर अभावों से निकला मगर

कदम बढ़ते गए उस दुनिया मे जो थी भाव विहीन
****

7. मैने जहां जाल फैंका

यार शागिर्द निकला हर तिलिस्म तोड चला
अखाड़े का मैं शूरमा वहां तू पटकनी दे रहा

बड़े बड़े शूरमा यहां मुझसे खौफ खाते रहे
बड़े बडो को मैने पटका तू मुझे पटक रहा

मेरी हर चाल में तू अपना जाल बुनता रहा
मैने जहां जाल फैंका तू वो जाल उड़ा चला

एक सौ तीस करोड़ जहां मेरे तलबगार हुए
न समझ पाया तू किस मिट्टी का बना हुआ

राजनीति की इस चौसर में मैं पांसे फेंकता
मगर सदा से फैंसला तेरे हक में क्यों हुआ

मैरे संघी साथी थे तू अकेला संघ बना रहा
मेरा कद बढ़ा मगर तेरा और बड़ा हो गया

****

8. सत्यमेव जयते कहे

सर्वोच्च अदालत राष्ट्र का सन्मान रहेगा
जहां हर भारतीय को सविंधान मिलेगा
आते इस चौखट पर कि न्याय मिलेगा
कुछ सोचते यह हमारे कहने में चलेगा

क्या अब अदालते सन्मान खोने लगी
क्या कोर्ट का कंटेम्प्ट निर्बल होने लगा
सोशल मीडिया का जब दौर चल रहा
हर कोई आलोचनो का शिकार हो रहा

सत्ता चाहती कोर्ट उनका समर्थन करे
विपक्ष चाहता है कोर्ट उनके साथ चले
भूल रहे सब कोर्ट संविधान से रचे हुए
कोर्ट बोलेंगे संवैधानिक मूल्यों के लिए

कोर्ट का सन्मान जनता का सन्मान है
कद्र जनता से पा कद्र जनता की करते
क्या कोर्ट बेसाखिओ पर चलने लगे है
न्याय ढोने लगे है अब ट्रोल होने लगे है

सता जब भी अपनी मनमानी करती है
उन्हे न्याय मिले जनता सदा चाहती है
संविधान रक्षा में ये प्रहरी बन खड़ा रहे
सर्वोच्च अदालत से ऐसा सन्मान मिले

आज का दौर ट्रोल का सब ट्रोल हो रहे
ट्रोल करने को मजबूर यहां ट्रोल हो रहे
मत भूलना ट्रोल संस्था को कमजोर करे
आपकी ताकत से अदालते पुष्ट होती रहे

क्या अदालत का कद छोटा होने लगा है
क्यो अब अदालत भी ट्रोल होने लगी है
अदालत भी अगर बेआबरू होती रहेगी
जनता की आबरू सवाल के घेरे में होगी

सच के साथ अगर जनता खड़ी रहेगी
कोर्ट सदा उनके रहनुमा बन खडे रहेंगे
कोर्ट के साथ रहे आपकी ताकत वे बने
खड़े सत्य के साथ सत्यमेव जयते कहे

ट्रोल का दौर जो आया है वक्त ये जाएगा
खड़े होंगे पास पास खड़े होंगे साथ साथ
वक्त आपका लौटेगा वक्त हमारा आएगा
संविधान जीतेगा संविधान राज आएगा

****

9. लोकतंत्र गहना है सदियो से

लोकतंत्र गहना है सदियो से धरा ने संभाला
मेहनत ईमान से जी पाऊँ मेरा धर्म सिखाता
जब इतिहास उठाता सदियो की छाप पाता
सदियो से धर्मग्रंथो में गुरु अनुशासन आता

एक समझ डर था निरंकुशता पे अंकुश रहा
लोकतंत्र में सदियो से राजा के सिर गुरु रहा
महाराजा धरा पर हुए निरंकुश कभी नही रहे
ऋषियों की छत्रछाया में राजधर्म निभाते गए

नही फायदा चारण प्रलाप गुलामी करने का
प्रशंसा करो भगवान की नीति पर चले जाना
मानसिकता बदलो मालिक तुम गुलाम नही
सही को सही कहना गलत कभी मंजूर नही

जमीर जगा खड़े रहना चलना सत्य के साथ
राह कठिन सही मगर मंजिल सदा करीब है
शास्त्र सम्मत जीवन धर्म परोपकार जीवन है
मेरा धर्म मेरा जीवन एवं सत्य ही मेरा धर्म है

मैं चारण नही किसी की प्रशंसा के पुल बांधू
परमात्मा शक्ति दे गलत को गलत कह डालू
****

10. संस्कारी हिंदुत्व के दौर में

फिसलन बढ़ रही मत खड़े हो जाना
रपटते जाओगे आगे फिसल ज्यादा है
आ गए हो संस्कारी हिंदुत्व के दौर में
जहाँ गुनाह को गौरव बताया जाना है

कौन कहेगा गुनाह का धर्म नही होता
धर्म ही गुनाहों का सरगना हो गया है
भावी फिसलन का डर अब बचा नही
यहां गुनाहगार भी संस्कारी हो गया है

क्या आदर्श समाज ऐसे बना पाएंगे
आपसी भाईचारे से क्या डरते रहेंगे
जंगली जानवरों का डर अब न रहा
समाज के बीच दरिंदे सन्मान पाएंगे

क्यों समाज संस्कारो की दुहाई देगा
संस्कार इंसानियत को बहा जाएगा
भयावना मंजर होगा बवंडर आएगा
क्या हमारे बीच दरिंदे पनपते जाएंगे

समाज रचे गए वक्त का तकाजा रहा
जनता जानवरो से महफूज रह सके
आज भेड़ो की खाल में भेड़िए घूमते
समाज मे बलात्कारी संस्कारी हो गया
****

11. आंसू की कीमत नही लगाइएगा

मार्केटिंग तो कर लीजिए गहराई में न जाइयेगा
नारी वेदना पर रामबाबू संवेदना न दिखाइएगा
मत झाँको इन गलियो में सैलाब बहा ले जाएगा
तिजारत करना सौदे में फायदा देखते जाइएगा

समाज की बेड़ियो में जकड़ सलीब पे टांग गए
रात्रि में भाग जाइए तथागत बन लौट आइएगा
देवी यशोधरा के दर्द में आप आंसू न बहाइयेगा
आंसू की तिजारत करिए कीमत नही लगाइएगा

मां पत्नी बहु बेटी औकात नही क्या चुकाइयेगा
नजरे चुरा लेना कशीदे पढ़के आगे बढ़ जाइएगा
छोटे नन्हे बड़े बुजुर्ग है उधर नजरे पहुंचेगी कैसे
मत झांको महत्वकांक्षा की सीधी चढ़ जाइएगा

खून किसी का हो आप तिजारत कर जाइएगा
शहादत कोई देगा आप इतिहास बना जाइएगा

****

12. जीवन सदियो का हो जाए

बताना भूल गए पचास के बाद क्या होना था
वक्त आया दो चार नही पचास दिन मांग बैठे

आपका बखान इतिहास भी नही कर पायेगा
दशक मांगते मांगते आज आप सदी मांग बैठे

आपका भी हमारा जीवन सदियो का हो जाए
अब रामबाबू आप कुछ ये चमत्कार कर जाए

आप रहे जुगजुग जिये हमभी रहे सदियो तक
सदियो आप दाता बने रहे हम लाभ लेते जाएं

पुराना विकास कबाड़ समझ आप बेच आए
दोस्तो के विकास को देश सदा कंधा दे जाए

****

13. मोटाभाई ऐसा क्या हुआ

जंगलराज से लड़ने हमने नीतीश का साथ दिया
फिर वह क्यो जंगल राज का सरगना होता गया

मोटाभाई ये कैसे हुआ बिहार में ऐसा क्या हुआ
गांव में हम बिजली लाए लालटेन रोशन हो गया

हमने जिसे हमारा सरगना और मुखिया बनाया
हमें आज उसे भ्रष्टाचार का मुखिया कहना पडा

कल तक हम खड़े रहे थे सुशासन बाबू के साथ
आज हमने उन्हें जंगलराज का साथी बता दिया

जिसे हमने शुद्धिकरण कर अपना नेता बनाया
मोटाभाई ऐसा क्या हुआ वह हमे मैला कर रहा

****

14. स्टेयरिंग अब संभालो

अग्निवीर जयजवान कानून से जयकिसान होता
सड़क विकास होता मंगल ग्रह पहुंचने बजट देते

अनुसंधान बजट देते क्यों वैज्ञानिक नासा में होते
पुराने एयरपोर्ट न संभले नए किसके लिए बनाते

पार्टी से ऊपर उठते देश से ऊंचा कुछ नही होता
बेरोजगारी महंगाई भ्रष्टाचार को उखाड फेंक देते

भ्रष्टाचार केंद्र राज्य न होता गुनाह के धर्म न होते
ईमानदारी से आगे बढते आठ वर्ष कम नही होते

डॉक्टर वकील व्यापारी का पारिवारिक धंधा हो
पर कहां उसका बेटा डॉक्टर वकील एमबीए हो

परिवारवाद का झुनझुना कब तक संगीत दे देगा
एक दिन तो नाकामी का नशा सिर चढ़ बोलेगा

इमरजेंसी का कालापन देखे उजले में जरा झाँके
साधारण जन जीवन कैसे आसान होता है झांके

सरकार में भ्रष्टाचार का दानव कैसे झाँकता देखे
सरकारी महकमो में अनुशासन कैसे आया देखे

आसपास की बुराइयों के खिलाफ झंडा उठाओ

बचते कोयले की दलाली से हाथ काले न करते

करो कुछ अस्सी वर्ष अकर्मण्य को कम पड़ते
जाति धर्म का तमगा उतारे आठ वर्ष कम न थे

जिस ने देश को लूटा है वो कब लौटाने आएंगे
आपने दो दशक मांगा अब किनारे पर आ गए

भाषण से भीड़ इक्कठा करते दान से पेट भरते
रोजगार जुटाते आत्ममुग्धता से बाहर आ जाते

दुनिया की बीस टका आबादी आपको ताक रही
बैठे हो ड्राइविंग सीट पर अब गाड़ी आगे बढ़ाओ

मत ढूंढो नुक़्श पुरानी ड्राइवरी में डरावनी है राहे
स्टेयरिंग अब संभालो अटकी यहां करोड़ो जाने

****

15. हर घर तिरंगा फहराओ

साहब कहते रामबाबू क्या पंद्रह अगस्त है
फिर लालकिले पर जनगण क्यों नदारद है
जिनका जहां घर वे वहीं झंडा फहरा लिए
आप मैं दोनों अकेले आज यहां पर आ गए

जिस देश मे अस्सी करोड़ गरीब बसते रहे
पांच किलो अनाज में जीवन बसर कर रहे
मीटर की किमत रामबाबू आप कैसे जाने
सालभर एक मीटर में अपना तन ढंक देते

कोई फतवा पढ़े कोई जुमला उछाल जाए
पेट की आग रामबाबू भाषण से कैसे भागे
दो शब्द महंगाई बेरोजगारी पर बोलते नही
तिरंगा मगर आपकी नाकामी ढंक जाएगा

बेघर को घर दे दो हर घर तिरंगा फहराओ
बचीखुची इज्जत ढंके वो इज्जत दे जाओ
तीन दिन राष्ट्र सम्मान में तिरंगा लहराएगा
फिर गरीब गोटू की लंगोटी तो न बनाएगा

याद होगा रामबाबू नौ लाख दिए लगाए थे
बचे दियो के तेल में कई चौके चल पाए थे
जीत आपकी होगी राष्ट्र सम्मान कर दिया
बचे में साल भर गरीब का तन ढंक दिया

माहौल जश्न का होगा देश जश्न मनाएगा
रामबाबू आपको जरूर खुश कर जाएगा
फ्लैटवाले जो सार्वजनिक स्थलो पर जाते
बंद रहेंगे घर मे वहीं स्वतंत्रता दिवस मनाते
****

16. संसद में मंत्री का निर्भीक संवाद

अंदर हंगामा करे स्पीकर ने तड़ीपार किया
संसद परिसर मे गाँधीजी के पास खड़े हुए
मुद्दे पर बहस न होती मंत्री संसद नही आते
सांसद मुंह ताक रहे कौन फटे में टांग डाले

चुपचाप देखे विपक्ष खिसक जाए हौले हौले
मंत्री बोलेंगे जब संसद विपक्ष मुक्त हो जाए
महंगाई का नाम सुन मंत्री को बुखार आये
पर संसद में लड़ने भिड़ने सबसे आगे आये

संसद को गांव का गली चौराहा समझ बैठे
औरते वहां जाकर गली के स्तर पे लड बैठे
विपक्ष मुक्त संसद में स्वस्थ बहस हो पाएगी
मंत्री जी बोलेगे स्पीकर की समझ मे आएगी

मंत्री जनता के बीच विपक्ष भूमिका न होगी
अंतराय न होगा महंगाई पर बहस हो जाएगी
शोर शराबा न तकरार जनता समझ जायेगी
संसद में मंत्री का निर्भीक संवाद हो जाएगा

महंगाई जरूरी जनहित में वे समझा जाएंगे
आधी रोटी खाकर उन्हें लाभ समझ आएंगा
****

17. रेवडी सता के रेडार पर

रेवडी ले लो शोर उठ रहा है हर गली
फिर रही भीलनी बेचे रेवड़ी गली गली
रेवडी सदियो से प्रसिद्ध रही मेरठ की
बिकती रही उस बाजार की गली गली

सत्ता ने स्वाद चखा तो मंज़र बदल गया
हर नेता टोकरी लिए जा रहा गली गली
हर कोई अपनी रेवड़ी अच्छी बता रहा
दूसरे की रेवड़ी के वो दुर्गुण गिना रहा

जब जब चीजे सता के रेडार पर आई
हर चीज को अपनी कीमत समझ आई
सब अपनी रेवड़ी को जायज ठहरा रहे
सेहत बनायेगी या नुक़सान कर जाएगी

जो सुबह शाम खाने का जुगाड़ में ही रहे
आम जनता 300 यूनिट में खुश होती रहे
इतनी सस्ती हो गयी एक वोट में बिक रही
जमाना ब्रांडिंग था महंगी अच्छी हो गयी

ब्रांडेड रेवड़ियां बहुत महंगे में बिकने लगी
बड़े चंदे के बदले सेठियो को मिलने लगी
सेठिये करोडो के चंदे देकर रेवड़ियां ले रहे
उसके बदले वे अरबो की कमाई करने लगे

जनता रेवड़ी के करोड़ सुन ताली पीट रही
भूल रहे सब उनके पैसे की रेवडी बन रही
अंधा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपनो को देय
बन जाए थैली का चट्टाबट्टा वो रेवड़ी लेय

****

18. सड़क दुर्दशा की पटकथा

धौम्य शिष्य आरुणि गुरु वाक्य पर तत्पर रहै
मौसम मिजाज का डर यह सड़क बह न जाए

बरखा तांडव जोरो पर था इंद्रदेव परीक्षा ले रहे
सड़क विकास में विश्वगुरु शाख पर बट्टा न लगे

गुरु भक्ति में निछावर गुरुभक्त वुरु आदेश ले
तूफान से टकराने कुछ कर गुजरने बेताब था

बारिश का तांडव सड़क जगह जगह बह गयी
धैर्य परीक्षा दांव पर जैसे पर्चा वाइरल हो रहा

बेबस आज आरुणि ये मंझर कैसे रोक पाता
सड़क को बचाने में वह कहाँ कहाँ सो पाता

सवेरे गुरु ने जो देखा ह्रदय विदारक दृश्य रहा
सड़क दुर्दशा की पटकथा सुर्खियां बटोर रही

एक आरुणि क्या करे सड़क धराशाई हो गयी
आरुणि की नही सैकड़ो भक्तों की जरूरत थी

कुछ भक्त डूबाते रहे कुछ बचाने में लग जाते
ट्रोल की फौज सड़क ढहने के फायदे गिनाते

****

19. शहीद बाहर से मिल जाए

चूल्हे की आग ठंड़ी है रसोई गैस महंगी हो जाए
सेंकने में लगे है राहनीति रोटियां सिक नही पाए

विपक्ष आये जो करीब स्वार्थ रोडा अटकाता जाए
विपक्ष की आग ठंडी पड रही एक नही होने पाए

ईडी सीबीआई की एंट्री बीच में तड़का लगा जाए
विधायको की खरीद फरोख्त दिल जलाती जाए

मुद्दों की आंधी चल रही एक पकड़े दूसरा जाये
किस किस से लडे अकेले सब बेबस नज़र आए

ना तोड़ मिल पाए तिलिस्म का सब टूटते जाए
जितना जोड़ लगा रहे उससे ज्यादा फटता जाए

सोच रहे कोई बिल्ली के गले में घंटी बांध आए
उनके इस महायुद्ध मे शहीद बाहर से मिल जाए

****

20. जनता आई आपके द्वार

जनता आई आपके द्वार आप घर छोड़ भागे
मिल लेते जरा जनता ने सिरमौर बनाया था
सैना पुलिस भी जनता की राह रोक रही थी
देख लेते मंजर ये जिसने आपको बचाया था

राष्ट्रवाद राग सुना आपने आंतक मिटाया था
जनता के चहेते थे पर जाति धर्म मे बांटा था
यार परिवार रिश्तों की चाहत पालते रह गए
भ्रष्टाचार जड़े गहरी इकॉनोमी न समझ पाए

क्यों इन्हें आपका दरवाज़े तोड़ आना पड़ता
क्यों आपको शानोशौकत छोड़ जाना पड़ता
आपने तो जनता को सदा नादान समझा था
जनसेवक बनकर आये राजसी ठाठ पाले थे

जब आई अपने पे जानो क्या हाल बनाती है
आयी आपके द्वार आपको भागना पड़ा था
आपका स्वीमिंग पुल पब्लिक ने स्नान किया
मंजर था आक्रोश का घर में दावत टेस्ट किया

कहाँ जनता का नसीब ऐसा वैभव झांक सके
आज तहस नहस करने आप तक पहुंच सके
टेक्स से आप ऐशोआराम की खैरख्वाह बनाये
रातों की नींद हराम हुई आपके ख्वाबगाह आये

ऐशो आराम जनता के दारोमदार पे जिंदा था
आपका एक अच्छा जीवन देने का वादा था
राजशाही जीवन मे बलवा कोई नया नही था
आप जनता को भूल गए हस्र यह तो होना था
****

21. हिंदेआज़म

गांव में रहती मां से मिलना जश्न से कम नही
चमक कम कहां जब बंदा मां को मिलने चले

बेटा चले चेहरे पर चीनी लाइट सी चमक रहे
वे चेहरे पर एलईडी लगाए चेहरा चमका चले

विश्वगुरु चमके चीनी लाइट में ऐसा दम कहां
गरीब देश का शहंशाह चीनी लाइट से चमके

हम इश्क़ चमकाएँ तुम बस हुस्न चमकाओ
कि हैरान देख आलम हमें भी हो तुम्हें भी हो

****

22. गुलाम आज़ाद हो गए

पार्टी से आवाज़ आती गुलाम आज़ाद हो गए
दोस्ताना जोडेंगे फिर आज़ाद गुलाम हो जाए
कहे डूबते जहाज से अक्सर चूहे भाग जाते है
परिवार मुसीबत में हो अपने कैसे भाग पाते है

अच्छे वक्त के साथी बुरे वक्त में मुंह मोड़ चले
किसको मुंह दिखाओगे कैसे मुंह छुपा पाओगे
एक बार देख तो लेते क्या नाराजगी जायज़ है
जो खुद निर्णय नही लेता कैसे गार्ड ले पाएगा

यक्ष प्रश्न सत्ता और सुविधा हर हाल में चाहिए
समाजसेवा सत्ता का लबादा ओढ़े ही खड़ी रहे
आपकी कोठी बचे पार्टी से बगावत की ठानी
पडौसी के कंधे पे रोये आज मॉडिफाई हो गए

अच्छे वक्त के साथी बुरे वक्त में साथ रह पाते
विपक्ष की चकाचौंध में इस कदर न खो जाते
सरकारी कोठी न छूटी कश्मीरीराज मिल जाए
जिस पार्टी की गोद मे खेलते उसे उजाड़ गए

हार जीत लीडर की नही हर नेता की समझते
मोरल ग्राउंड पर कार्यकारिणी से इस्तीफा देते
याद करते समाज को क्या ही इज्जत दे पाए
पार्टी के साथ रहै नही समाज के साथ रह पाए

रिटायर आप हुए आंसू विपक्ष के निकल आए
वे आपको पद्म विभूषण से सम्मानित कर जाए
जाइये शौक से हमारी शुभकामना लेते जाइए
पचास साल याद कर कीचड़ न उछाल जाइये

सपने सब देखते कैप्टन ने भी सपना देखा था
जिस गुमान में गए खुद उजड़े पार्टी उजाड़ गए
चलते बने आप पार्टी की बर्बादी देख नही पाए
आपका छोड़ना भी पार्टी की बर्बादी ले आए

आपको चलना सिखाया वे चलना न भूल गए
गम नही बिल्ली के भाग से छींके नही टूट गए
जर्जर हुए पिलर गिरते नए पिलर सदा आएंगे
आप जाइये दुआओ के साथ महल खड़े रहेंगे

अपनो के चरित्रहरण में दर्द की झलक कम है
आपका स्वार्थ और महत्वकांक्षाएं बड़ी हुई है
आपका कोई नही गंतव्य में चरित्रहरण आम है
चिट्ठी किसने लिखी आईटी सेल का कमाल है

****

23. रवीशजी कैसे बचोगे

रवीशजी आवाज़ न खरीद सके भोंपू खरीद बैठे
कहाँ भाषण सुनाओगे जहां जाओगे हमे पाओगे
देश हमारा संसाधन हमारे भेल सेल हमारा हुआ
आपकी संपति रेल बोलती अब रेल हमारा हुआ

सता नेता सब हमारे कानून मीडिया हमारा हुआ
देश के पीलर हमारे मानव संसाधन हमारा हुआ
नौकरी खेती व्यापार धंधा क्या क्या तुम करोगे
जिधर जाओगे बिजली तेल ईंधन हमसे पाओगे

रवीशजी कैसे बचोगे हर तरफ हमको ही पाओगे
संमझ लो हथियार डालो एनडिटीवी हमारा हुआ

****

24. पवित्र खड़ाऊ शीशधर

देश निकाले से खड़ाऊ का ये इतिहास रहा
सिंहासन पाने में खडाऊ का सौभाग्य रहा

त्रेतायुग में खड़ाऊ उठा भरतजी कृतज्ञ हुए
राजनैतिक धरोहर को वे शिरोधार्य कर गए

महाकाली के पावन मंदिर ये अवसर आया
तड़ीपार खड़ाऊ शीश धरकर वे कृतज्ञ हुए

अध्यक्ष ने कर्तव्य पथ पर करतब जो दिखाया
पवित्र खड़ाऊ शीशधर पार्टी का मान बढ़ाया

भक्त जन करे स्तुति कब यह अवसर आएगा
वह भी तड़ीपार खड़ाऊ शीश पर धर पायेगा

****

25. पहले न्यूज़ क्लोन

दुनिया लगी हुई थी क्लोन बनाने में
मशीनो के हज़ारो क्लोन बनाते गए
विश्व विज्ञान भेड़ो के क्लोन बना रहे
और मानव क्लोन की खोज कर रहे

क्लोन विज्ञान में हम ऐसे आगे बढे
पहले न्यूज़ क्लोन हमारे देश मे बने
सारे न्यूज़ एक फैक्टरी से इज़ाद हुए
सब की प्रक्रिया में गजब साम्य रहा

नेशनल न्यूज़ देख जनता चकरा रही
चेनल बदल बदल कोशिश करते रहे
हर चैनल पर एक ही न्यूज़ आने लगी
चैनेल मालिक प्रवक्ता मगर अलग रहे

न्यूज़ क्लोन का आलम ऐसा हो गया
हर न्यूज़ एक दिमाग में उपजता गया
जो समाज का आईना बन नही पाये
चरण वंदना करते सत्ता के चारण हुए
****

26. मैं तो साला साहब हुआ

मैंने सपना देखा एलन मसक हो गया
भारत आ गया पासपोर्ट कबाड़ लिया
तीन सौ सांसद कर लिये मेरी मुठ्ठी में
तीस हजार करोड़ में सब मेरा हो गया

मेरी संसद चलती रहै देश मेरा हो गया
दुनिया का चौथाई बाजार मेरा हो गया
क्या ही समझ पाया ईमान की कीमत
कौन रोके टोके देश कानून मेरा हुआ

तीस लाख करोड़ का बजट बने जहां
सोने की मुर्गीऔर हर अंडा मेरा हुआ
सरकारी दर से दस टके मिलते जाए
साल तीन लाख करोड़ मुनाफा हुआ

इंटरनेट रेल सड़क सेवा सब मेरा हुआ
कौन रोकेगा मैं तो साला साहब हुआ
अखंड पाखंड आज खंड खंड हो रहा
सत्य के धरातल पर मैं सपने देख रहा

यहां तो लोकतंत्र कौड़ियों में बिक रहा
क्या मेरे देश का गौरव कमजोर हुआ
काश जनता समझ पाती यह आजादी
भूख से सस्ता जमीर एवं आजादी हुआ
****

27. आपकी आत्मकथा

आखिरी अस्त्र मान आत्मकथा लिख बैठे
पढ़ आपकी आत्मकथा मन द्रवित हो उठे
जब रिटायर हुए आलोचना के शिकार हुए
आत्मकथा लिख अब क्या साबित कर रहे

लोकतंत्र न्याय खतरे में है आप बोल रहे थे
नाती पोती पूछेंगे यह दुहाई आप दे रहे थे
लोकतंत्र के इतिहास में ये झंडा उठाया था
लोकतंत्र खतरे में आया आप कहाँ खड़े थे

सही वेदना थी अगर न्याय कटघरे में रहेगा
जजो की क्षमता को कुंठित करता जाएगा
पर जैसा लिखेंगे क्या इतिहास बन जायेगा
लगता नही कुछ आत्मकथा से छुट जाएगा

नारी गरिमा की आंच जो दामन जला रही
आप ही जज बन फैसला हक में लिख रहे
सदियो का फैसला आप घंटो में लिख गए
सरकार की वाहवाही ओहदा भी लूट गये

आपका वकील जितना घंटो में कमा रहा
आपने सारा जीवन उतने मे व्यतीत किया
समय का इंसाफ था चीफ जस्टिस बन गये
वरसो की कमाई इज्जत दांव पर लगा गए

सरकारी दबाब में राजनीति के साथ हो गए
सवाल बनता है कुछ तो आपने फ़ेवर किया
आपका रिपोर्ट कार्ड सरकार नेबना दिया
आपकी झुकने की नीति का सन्मान किया

जनता पूछ रही क्यो आप पर ये फ़ेवर हुआ
जीवन भर अछूते रहे तो क्यो इतने डर गए
आत्मकथा से सहानुभूति की आशा रखते
क्यो सरकार के सामने नतमस्तक आप हुए

कानून के रखवाले को सत्ता ने पटक दिया
क्या आत्मकथा में इसका उल्लेख कर दिया

****

28. हू एम आई

हू एम आई बहु जो सास पे गुर्राई सास चकराई
कोई नेता की नजर पड़ी या लॉटरी निकल आई

रुआब न कोई शिक्षा दीक्षा बार बार लड़ पडती
बस इसी हुनर से बढ़ रही ताकत कहां से आई

बदजुबान बदमिजाज हुई क्या एक्टर हो गयी
नारी संकोच मर्यादा छोडी तो सड़क पर आयी

जब घिरी सब तरफ से नेता के पीछे छुप गयी
पर लड़ने का मौका देख बीच चौक में आ गयी

सास मुंह लगाए नही तो रौद्र रूप धारण किया
हू एम आई का ब्रह्म वाक्य तब उच्चारण किया

****

29. अब सत्ता भगवान है

आरती बदल गयी झांझर नगाड़े मशीनी है
झाँको मंदिर में एक भगवान एक पुजारी है

भगवान न ढूंढो मंदिरों में बसते वे भक्तों में
राजनीति के मंदिर में अब सत्ता भगवान है

रूप सब बदल रहे भक्त पुजारी बदल रहे
ईडी हिन्दुत्व सिखा पुजारी धर्म निभा रहे

अगर हिन्दुत्व भूल जाए तो पुजारी आएंगे
नोटिस दे जाएंगे हिंदुत्व की याद दिलाएंगे

ईडी समझाएगी असली जगह दिखाएंगी
सत्ता का वर्चस्व और भगवान दिखाएंगी

मन बदलकर सता का भक्त बना जायेंगी
लाइन तोड़ी कृष्ण जन्म स्थल दिखाएगी

****

30. हल्की सी स्मृति

हल्की सी स्मृति थी बेटी ने साझा किया
गोआ रेस्टोरेंट पर उसे कांग्रेचुलेट किया
बेटी ने एक इंटरव्यू में यह प्रचार किया
इंटरनेट पर इंटरव्यू दे दिल जीत लिया

अक्सर लोग बहकते बार के मुहाने पर
गंभीरता से क्यों ले रहे नशे में कहा हो
बेबी ने अपना कहा क्या जुल्म किया
कहने भर से कब मालिकाना हो गया

सदन में अभिनय की जरूरत नही रही
आपको कोई शीशदान अब करना नही
अभिनय से बाहर निकल झांक लो जरा
बेबी करियर का मामला है बार का नही

बच्चें कारनामे करे सीना चौड़ा होता है
खुद का धंधा नही मालिकाना न होता है
लोगो ने सता के फायदे में करोड़ो कमाए
यह तो कुछ भी नही बस एक लाइसेंस है

धुंआ है आग दिखेगी आरोप में दम नही
बेटी बार चलाए यह सार्वजनिक तो नही
समाचार में झोल है कोंग्रेस बजाती ढोल
ढोल दूर बज रहा दरवाज़े तक आएगा

किसी को जो दोस्त का यार पसंद आए
गुनाह तो नही बेबी को बार पसंद आए
बेटी सदा देवी रूप है क्यों बदनाम करे
उम्र अठारह पढ़ती सर्टिफिकेट आयेगा

****

31. फ़ोन से डरने लगे है

कभी सुनते थे दीवारों के कान होते है
आज दिशाओं के आंख कान हो रहे है

शान से कहता जीवन खुली किताब है
डरने लगा हूँ फ़ोन और न खोल जाए

कब कहाँ क्या यह रेकॉर्ड कर जाता है
बड़ी शख्सियत को बौना कर जाता है

जेब मे फ़ोन रखने से भी डर लगता है
डर है दिल के राज रिकॉर्ड न हो जाए

आप घर आएं फ़ोन जमा कराना होगा
आपका भरोसा है फ़ोन से डरने लगे है

सभी नेता बाबु कुछ ऐसे घबराने लगे है
जिधर देखो फोन से खौफ खाने लगे है
****

32. कोर्ट को सुप्रीम बनाने का

कैसे कोई भीड़ में कीचड़ उछाल जाएगा
गंदगी फैलाएगा पाक साफ बच जाएगा
रण नही वर्चस्व का सविंधान बचाने का
वक्त आ गया कोर्ट को सुप्रीम बनाने का

कैसे कोई सुप्रीम कोठा कह चलते बना
वक्त आ गया उसको पकड़ कर लाने का
कटघरे में प्रशांत था वहां खडा करने का
वक्त आ गया कोर्ट में कंटेम्प्ट चलाने का

कौन सत्ता की शह में बेलगाम होने लगा
वक्त है याद करने का है याद दिलाने का
कब कौन लोकतंत्र की मर्यादा भुल गया
वक्त आ गया उसके कर्म प्रकट लाने का

जब आवाज़ उठने लगी पुष्ठ होती रहेगी
कोई मीडिया न्याय से ऊपर तो न होगा
हर ट्रोल को अब यह हिसाब देना होगा
वक्त आया कोर्ट को हिसाब लेना होगा

न्याय बेबस नही ट्रोल से डर नही सकते
ट्रोल जनता की आवाज़ हो नही सकते
जमीर जगाए इस मंजर से उभरना होगा
कोर्ट शिकार नही है शिकारी बनना होगा

याद करो जो विरासत समाज से पाई है
आज समाज कोर्ट से न्याय मांग रहा है
न्याय बचाना है गुनाह सामने लाना होगा
अमन लाने कोर्ट में अपराधी लाना होगा

क्या न्याय उस झूठ को पकड़ न पायेगा
अब फिर द्रोण का हत्यारा बच जाएगा
झूठ फैला गया वो बेगुनाह न कहलायेगा
वक्त आ गया कोर्ट उसके गुनाह बताएगा
****

33. मि लार्ड रहनुमा बनिये

आग बढ़ी थी आवाज़ उठी पर आप नही थे
आप बस्ती में रहे परिस्थिति से बेखबर रहे
आप भी रहनुमा थे लोगो ने गुहार लगा रहे
आप को जगाया मगर गहरी नींद सोते रहे

लोगो की आस थे कहाँ अहसास करा पाए
बेगुनाह झुलसे थे आप नजरंदाज़ कर गए
राजनीति सक्रिय थी मगर आप खामोश रहै
सोशल डिजिटल मीडिया ने कत्ल कर दिये

चरित्र हत्या कर गये बेगुनाह मरे जलील हुए
वे निरंकुश हाथों में नाचे सबको ट्रोल कर रहे
आज वही आग बढी आपके द्वार तक आयी
आप अहसास करते कद को छोटा बना रही

कहते है जमाने मे कीमत हर कृत्य की होगी
इस अदालत के आगे भी एक अदालत होगी
अभी वक्त है वक्त का तकाज़ा है कुछ करिये
आग पर अंकुश होगा तो आपका वजूद होगा

मि लार्ड रहनुमा बन अपना अहसास कराइये
आज भी आस की निगाहें आप की तरफ है।
****

34. समाज और दरिंदे

कानून बनाते रहे निर्भयाएं यूँही जलील होती
मर गई हमारी आत्मा निर्भया तू शोक करना
आततायी मार डाले तू घुट घुट कर मर जाना
रह रही लाशों के बीच गिद्दों का साम्राज्य यहां

कानून का जनाना उठ रहा है बीच चौराहे में
निर्भया गम न करे समाज की इस्मत लुट रही
नारी सन्मान पे आप भाषण अच्छा कर देना
निर्भया की सिसकियो को साज समाज देगा

देश मेरा रेपिस्ट का स्वर्ग कानून मजाक होगा
कानून बनानेवाला सजायाफ्ता को छोड़ देगा
कौन बने आवाज़ उसे स्वर्ग मे सिसकना होगा
बेबसी ऐसी समाज रेपिस्ट का सन्मान देखेगा

नारी सन्मान का उच्च आदर्श धर्म मे सदा रहा
बहन बेटियों की इज्जत में भी धर्म फर्क करेगा
सरेआम गिद्ध नोचेंगे समाज मे दावतेजश्न होगा
कोने में आंसू बहाना पर लबो को न खोल देना

निर्भया की शोकसभा मे जा कैंडल लगा आना
आग लगी है दूर बस्ती में तुम तो महफूज रहना
झांक आना कभी अतीत में समाज बने क्यों थे
आपस में ताकत बनकर दरिंदो से लडे क्यों थे
****

35. कहते है महंगाई किधर है

वक्त है डिनायल मोड से बाहर आने का
ख्वाबगाह छोड़ जनता के बीच जाने का

ख्वाबो में कब गरीब की रसोई दिखती
याद दिलाओ कहते है महंगाई किधर है

बंद न करो आंखे शिकारी गर्दन देखता
बस अब शतुरमुर्ग सी गर्दन ना छुपाओ

इधर देखा उधर देखा किधर नही देखा
दूर दूर देखा कहते है महंगाई किधर है

जब जनता डूबने के कगार पर आई है
सुनामी लहरें कब सता को बख्श पाई है

जनता पुकारे पानी गर्दन तक आ गया
आप सोते रहे कहते है महंगाई किधर है

नादान न बनो ऐसा कुछ मत कह जाओ
जनता को आप पर तरस आता रह जाए

वे अपनी सत्ता दे आपको सत्तासीन करे
तरस खा बताओ उन्हें महंगाई किधर है

वहां झाँक लो जहां फ्री अनाज पहुंच गया
पकाने के लिए पर सीलेंडर खाली रह गया

बूढ़े मांबाप को वक्त की रोटी न जुटा पाया
बेटे की बेबसी में देख लो महंगाई किधर है

बच्चे महंगाई में शिक्षा से वंचित रहते जाये
देश का भविष्य आंखों आगे घुटने टेक जाए

डरना जलजलां आये आपकी सांस उखडे
डॉक्टर मासुमियत से कह दे हवा किधर है

आलीशान बंगले में हवादार घर ओफिस मे
सुख सुविधाओं के बीच जमीर मरे न कहीं

जन आक्रोश आप तक पहुंच जाए कहीं
उजाडे दुनिया आप कहे महंगाई किधर है

लाठी में इंसाफ है पर मार में आवाज़ नही
नरो वा कुंजर छोडो नर कुंजर न बने कहीं

कहते बड़े बुजुर्ग डरना गरीब की आहो से
जीवन की जो डोर उसका परवरदिगार है

****

36. आग को ईंधन बनाए

सत्तर प्रतिशत बच्चे मोबाइल जाल में
व्यसन ये प्रदूषण फैला दूषण समाज में
तलाश शाद्वल्ल की आए ये मूकाम पर
विकासवाद झोंके मृगतृष्णा के जाल में

बहु बेटी नैप्पी न देखे मोबाइल में झांके
मोबाइल में मेसेज पोस्ट लाइक्स टटोले
बच्चियां साइबर बुल्लि की शिकार हो
बताए नही पर अवसाद ग्रस्त हो जाए

घंटो ऑनलाइन गेम मीडिया पर टंगे रहे
कॉमन है बच्चे अवसाद ग्रस्त होते जाए
भय चिंता चिड़चिड़ेपन के शिकार होते
पढ़ने में मन नही नेट बिन खाना न भाए

परफॉर्मेंस घटती गुस्सा बढ़े नींद न आये
जो टेग न हो रिमूव हो तो धैर्य खो जाए
अवसाद में क्या सुखद भविष्य देख रहे
मोबाइल से क्रिएटिविटी संभव हो जाए

आग ईजाद हुई खतरे उससे कम न थे
समय की मांग है आग को दिशा मिले
तारणहार बच्चों को व्यसन से बचाए
दे विकास मंत्र आग को ईंधन बनाए
****

37. जलभुन गयी वो शेरनी

मेरे गांव की वो लड़ाकू जो शेरनी कहलाती
बिना बात टकराती वह बखूबी उलझ जाती
बड़े पहलवान खौफ खाते उसे देख घबराते
सभ्रांत महिलाए डरती वे रास्ता बदल जाती

सीधी सादी भोली भाली गांव की महिलाए
सदा त्रस्त रहती एक रोज टकराने की ठानी
सबने मिल मुद्दा उठाया फिर उसे घेर डाला
उसके बच्चों पर दारू मांस का ठप्पा मारा

लोग कारण देखे वो बिना बात लड़ जाती
जलभुन गयी शेरनी तिलमिलाई टूट पड़ी
पनाह मांगे महिलाए कभी उसे न सताएगी
कसम खाई चाहे बहुत जलील हो जाएगी

शख्सियत को शत शत नमन तुलसी गाए
बंदउँ खल जस सेष सरोषा बरनइ पर दोषा
****

38. नूपुर जब खनखनाए

नूपुर जब खनखनाए अजीब राग छेड़ जाए
दिल में झनझनाहट अंजुमन में खुमार छाए
वीराने में खनखनाए अजीब सिरहन दे जाए
खौफजदा दिल मे डराने का सबब बन जाए

साज कोई आवाज कोई सूर पैदा कर जाये
उसका गहरा असर परिवेश पर होता जाए
एक वाकया कुछ ऐसा न्यूज़ चैनल पर हुआ
नूपुर की खनखनाहट सुदूर विश्व मे फैल गई

कोई कहता गलत हुआ कोई सही बता रहा
विश्व भी शने: शने: दो धड़ो में बंट सा गया
बात यही न थमी कथन सही था गलत था
अंदाजे बयान को वे साम्प्रदायिक रंग दे गए

सदियो से दोनो पाटों सी दूरी बना चल रहे
दो तारो के बीच कहीं शॉर्ट सरकट हो गया
मानवता का तकाजा अब समाज मे हो जाए
जिओ और जीने दो से यह बवंडर थम जाए

****

39. पेगासस मिल जाए

कानो कान किसी को खबर भी न हो
और कहीं से बस पेगासस मिल जाए
सरकार न जानती पेगासस कैसे आया
मेरा भी पेगासस चुपके से लग जाए

सहेलियां कानाफूसी कम करने लगी
व्हाट्सअप में सभी बिजी होने लगी
कामवाली मोबाइल में बीजी हो गयी
गली मोहल्ले की खबरें बंद होने लगी

कौन अब पडोस से खबरे लेके आएगा
मीरच मसाले का अब तड़का लगाएगा
आफिस के साथी आपस मे ग्रुप बनाए
बहु बेटियां पड़ोसने गॉसिप करती जाए

मैया मेरी सदा तेरे ही गुण गाती जाऊ
तेरी ही शरणो में मेरी ये अर्जी लगाऊ
मैया आज तो कोई ये चक्कर चला दे
जैसे हो जाए मुझेभी पेगासस दिला दे

घर बैठे सब मोबाइल में सेंध लगा जाऊं
नीरस जीवन मे फिर बहार लेकर आऊं
****

40. हमे चाचा दिला दो

रक्षाबंधन आया चाचा त्यौहार है राखी का
आपस में राखी बांधे समय पार्टी बचाने का
भुलाओ गिला शिकवा नजदीक हो जाओ
दिल को दिल से राहत होगी करीब आओ

खतरों को जानकर आप पाला बदलते रहे
दूर दूर गठबंधन कर आप कुर्सी बचाते रहे
आज फिर कुर्सी आयी ख़तरे में खेला होबे
खेल समझकर चाचा अब खेल दिखलाओ

आपके जो साथी है और जो दुश्मन हमारे
वो किसी के सगे नही उनको अब पहचानो
मौसम आया है अटूट बंधन में बंध जाओ
आपको मिले भतीजा हमे चाचा दिला दो

आप बिहारी मैं बिहारी बिहारी बन जाओ
दुश्मन हमारा एक चाचा उनको पहचानो
पुरानी बातें भूल जाओ अब करीब आओ
समय आ गया अब आप हमारे हो जाओ

****

41. रुपया फिसल जाए

डॉलर तेरी ये कहानी कहीं पर्वत कहीं पानी
ऊंचा जो चढ़ता जाए रूपया उतना गिर जाए

अर्थशास्त्री न समझे ये रोज इतिहास बनाए
निर्यातक खुश आयातक सर पकड बैठ जाए

अर्थशास्त्री थे प्रधानमंत्री डॉलर बढ़ता जाए
बहुत जोर लगाए डॉलर को कहां नाथ पाये

वक्त पे नाम कमाया डॉलर समझ न आया
मोटाभाई क्या करे ये गणित समझ न आए

नाकामी न अफसोस जनता त्रस्त हो जाए
व्यापार घाटा बढ़ गया रुपया फिसल जाए

डॉलर की नीयत सरकार समझ नही पाए
सरकार कोई भी रहे पर डॉलर बढ़ता जाए

विदेशी निवेशक धन शेयर बाजार में लाए
कमाकर भाग भागे रुपया निर्बल हो जाए

धंधा समेटकर अरबपति विदेश भाग जाए
संभाले संभलता नही ये मुंह चिढ़ाता जाए

****

42. वो उधर पूंछ हिलाए

चेनल चलाने को जरूरत एक एंकर की
करो अप्लाई न्यूज़ प्रोग्राम करो सप्लाई

सत्ता के गुण गाए करोड़ो विज्ञापन लाए
मनचाही सैलरी करोड़ो में कमा ले जाए

हो झगडाली बात बात पर लड़ने वाली
तल्ख अंदाज में बाते बयान करने वाली

विपक्ष को गाली सत्ता के कशीदे पढले
सत्ता के सवाल भी विपक्ष से पूछ डाले

स्टूडियो में सब भीगी बिल्ली हो जाए
मेडम जिधर कहे वो उधर पूंछ हिलाए

जोड़ तोड़ कर डाले हिस्ट्री हिला जाए
ऐसी एक्टिग करे खबरे दम तोड़ जाए

****

43. यात्रा के खास पल

खोई राजनीति पाने यात्रा में निकल पड़े
यात्रा के खास पल लकीरो बीच पढ़ रहे

कुँवारा चले कुंवारे का आशीर्वाद लिए
कन्याकुमारी के कदमो से शुभारम्भ करे

पड़ाव तमिल महिलाओ ने प्रस्ताव दिया
हां करे तमिल कन्या से हस्तमिलाप करे

मातृसम महिला आगोश ले आशीश देती
बढ रहे कदम पथ पर सुखद संकेत रहे

आया वह पल जो रोमांच को बल मिले
रास्ते में कन्या प्यार से आलिंगन करे

प्रकट हो लाल साडी में वह चौंका गई
था शुभ संकेत स्वप्नवत सा चलता रहे

आगे आई बच्ची का चप्पल खुल गया
रुककर उसको वह चप्पल पहना दिया

समझो इशारे कुदरत अनकहा कह रही
समय पे ब्याह होता ये पच्चीस में मिले

कुदरत सपने मे हकीकत बयान करती

पचास हो गए सपने से निकल आओ

गृहस्थी बसा जीवन का आनंद उठाओ
बीबी बच्चे मां एक छत के नीचे पाओ

****

44. दुबई भाग निकले

गुप्ता और जुम्मा की दोस्ती मिसाल हुई
राष्ट्रीय सम्पति नेता व्यापारी में बंट गई
300 करोड़ दे जुम्मा को राष्ट्रपति बनाए
जुम्मा गुप्ता को राज्य संपदा लुटा आए

गुप्ता ने ज़ूमा पत्नि बच्चो को नौकरी दी
जुम्मा घनिष्ठता से गुप्ता जुप्टा कहलाए
रेल, बंदरगाह पाइपलाइन इंफ्रास्ट्रकचर
माइनिंग हर फील्ड में अग्रसर होते गए

कंप्यूटर उपकरण,मीडिया खनन में फैले
साउथ अफ्रीका में सातवें धनी व्यक्ति हुए
सरकारी विभाग निगमो से अग्रीमेंट किए
सरकारी नियुक्तियां और निर्णय लेते रहे

ब्रिटिश कंपनी छबि बनाने को रख लिया
नकली ट्विटर ऑनलाइन सब शुरू किया
नस्लीय घृणा उकसा तनाव भड़काते रहे
भ्रष्टाचार के दावे रंगभेद में उलझाते गए

गुप्ता अफ्रीका में भ्रष्टाचार का पर्याय बने
धोखाधड़ी मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप लगे
गुप्ता अंतरराष्ट्रीय जांच के दायरे में आए
रातोरात घरबार छोड़ दुबई भाग निकले
****

45. सपना धराशायी हो गया

चौराहे पर बहुत रोई बहुत चिल्लाई
भीड़ इकठ्ठी करदी आपबीती सुनाई
चंद नामी ठेकेदारो ने रेप कर डाला
ज़िल्लत कर दी फजीहत कर डाली

विदेश की धरती पर दावत में बुलाया
प्रोग्राम केंसल किया आबरू उड़ाली
कुछ सिरफिरो को भरोसा नही हुआ
अपने संपर्कों से सच्चाई उघाड़ डाली

किसी ने उसको इन्वाइट नही किया था
उसने नामी गिरामी हॉल बुक कर डाले
मुजरा बुक किया हाल केंसल हो गया
इसका वैश्विक सपना धराशायी हो गया

दिल टूट गया बेबसी नजर आने लगी
बहुत पांव पटके सच्चाई सामने आयी

****

46. जिसने इतिहास को मिस किया

बच्चे त्रस्त हो रहै क्या पढ़ाया जाएगा
जंग छिड़ी है इतिहास में क्या पढ़ाएँगे
कितना पीछे जाएंगे क्या इसे बढ़ाएंगे
क्या कोर्स में केवल इतिहास पढ़ाएंगे

कोई कहै मुग़ल इतिहास क्यो कोर्स में
इतिहास में हिन्दू सम्राट को जगह नही है
वेद पुराणों पढ़ाने में जन्मो लग जाएंगे
कोई कहता है गीता क्यों नही पढ़ाते है

हर क्षेत्र देश विश्व का इतिहास विस्तृत है
जो दसवीं पास करते इतिहास पढ़ जाते
गिरेबान में झांके इतिहास क्यों पढ़ाते है
इतिहास दोहराता है ग़लती से बचाता है

नॉनमेट्रिक क्या अब पाठ्यक्रम बनाएंगे
नई शिक्षानीति लागू की है क्या हश्र होगा
विकास नए युग का इतिहास से न चलेगा
विज्ञान कंप्यूटर रोबोट से इतिहास बनेगा

बच्चे पूछते तलवार से लड़ना सिखाएंगे
फिर ड्रोन कंप्यूटर रोबोट कौन चलाएंगे
पुराने लोग अब शिक्षा में हस्तक्षेप न करे
बच्चों को भविष्य एवं इतिहास लिखने दे

समय बदल रहा रॉकेट गति से चल रहा
आठ सौ वर्ष पुराना इतिहास क्या करेगा
बच्चे कहते बहुत कुछ सीखना बाकी है
रोज लिखा जाता इतिहास पढ़ना बाकी है

तालिबान का पतन पुनर्स्थापन बताओ
श्रीलंका तबाही का इतिहास सिखाओ
अमेरिकी लोकतंत्र का रंग भेद दिखाओ
रूस की युद्ध नीति यूरोप वर्चस्व बताओ

चीन विस्तारवाद नीति कब सिखाओगे
जो महत्वकांक्षा में विश्व जलाने लगा है
देशों को एक्सपोज करो अर्थनीति से
जो सामरिक शस्त्रों का व्यापार करते है

उस गुप्ता को बताओ अफ्रीका में बसा
राजनीति हैक की कठपुतली सता बनी
एक्सपोज़ हुआ देश का क्या हश्र हुआ
गरीबी की खाई बढ़ा लूटपाट बढ़ा गया

राजा सम्राट बादशाह को चिरनिद्रा सोने दो
बच्चों काबिल बने उन्हें इतिहास लिखने दो
जिसने इतिहास को मिस किया कक्षा छोड़ी
उनको मोबाइल से हटा लाइब्रेरी भेजा करो
****

47. घुंघुरू बज उठे

घुंघुरू खनके आवाज़ दूर तक फैली
विश्वपटल पे चंहुओर सितार बज उठे
तार छेड़कर कोई म्यूजिक बजा गया
उठती लहरो के बीच सुनामी आ गया

प्रवक्ता क्या देश की आवाज़ हो गया
देश का कद प्रवक्ता से छोटा हो गया
जिसे कटघरे में होना समय मांग रहा
उसे छोड़ देश कटघर में खड़ा हुआ

कौन मिडिल ईस्ट कहाँ हम थे खड़े
डेढ़ करोड़ रोजगार जहां से चल रहा
देश के धनिको का पैसा जो लगा था
भक्त कैसे माने बेकफूट पर आ गया

भीड़ का बहाव किस तरफ जाने लगा
क्या भक्त भी नूपुर के पीछे चल पड़ा
धारा का बहाव बांध रोक नही पाएगा
नई जमात के पांव कौन थाम पाएगा
****

48. आखिर ध्यान किधर था

निजीकरण से आरक्षण ने दम तोड़ा था
बेरोजगारी बढती गईं रोजगार किधर था
जलसंकट में जल योजना दूर तक नही
सवाल आया आखिर ध्यान किधर था

हम यूएस कभी रूस के साथ खड़े रहे
वे हमे सीरिया नाइजीरिया से बता रहे
आग लगे बुलडोज़र शायद जायज था
विश्वगुरु न बने विदेश नीति किधर थी

खुशी के द्वार खुले खुशी से उछल पड़े
गेंहू एक्सपोर्ट से किसानों के भाव मिले
क्या इम्पोर्ट कर अस्सी करोड़ खिलाते
आत्मनिर्भर नही फिर ध्यान किधर था

ऑक्सीजन में टॉप थे कॅरोना दौर में
मैनेज न किया संकट नासूर बन गया
सुविधा कम पड गयी लाखो मर गए
समस्या समझते नही ध्यान किधर था

कोयला संकट था बिजली कटती गई
मैनेज करने की क्षमता चिढ़ाने लगी
हालात ऐसे बिगडे कि ट्रेन रुकने लगी
सवाल खड़ा आखिर ध्यान किधर था

दशको विपक्ष में रहे विपक्ष कमजोर था
विपक्ष को कमजोर जनता ने बनाया था
कबतक भरमाओगे भरम में जी जाओगे
याद रहै जनता ने सत्ता पर बिठाया था।

गली मे गाड़ी देख कुत्ते की नींद उड़ी
भौंकते कुत्ते कार की पीछे दौड़ पड़े
कार को भगाया कुत्तो ने स्पीड़ बढ़ाया
कुत्तो ने पीछा न छोड़ा तो ब्रेक लगाया

कुत्तों ने दौड़ रोकी भोंकना बंद किया
भूले क्यों भागे टायर पर सू सू किया
कुंठा से ग्रसित और खुश हो गए सारे
न एजेंडा रोडमैप दिशाभर्मित बेचारे।

****